मुगल काल में स्त्रियों की दशा का वर्णन

मुगलकालीन समाज में रित्रयों की दशा तथा जीवन बहुत दयनीय थी। समाज में पुरूशों के समान अधिकार प्राप्त नहीं था। उनकों सभी प्रकार की स्वत्रंता एवं खु ाीयों और त्यौहार से भी दुर रखा जाता था। राजघरानों की रित्रयों की अपेक्षा साधारण धर की स्त्रियों की द ाा से अत्यंत खराब थी। हिन्दू समाज में सती प्रथा, विघवा विवाह निशेघ, दहेज की प्रथा एवं आर्थिक पराधिनता साथ ही साथ ि ाक्षा पर प्रतिबंध होने के कारण उनका जीवन अभि ाप्त था।

मुगलकाल में प्राचीन भारत की तुलना में स्त्रियों की स्थिति में अत्यंत गिरावट आ गई थी। किसी लड़की का जन्म लेना पुत्र के जन्म की तुलना में शुभ नहीं माना जाता था यानी मुगल काल के समाज में पुत्री का जन्म लेना हेय दृष्टि से देखा जाता था। कर्नल यड़ के अनुसार ''राजपूत इस धारणा से ग्रसित थे कि वह दिन पतन का होता है। जब एक कन्या जन्म लेती है मुगलशाही घरानों में भी लड़के और लड़की का अंतर अकबर के इस कथन से आसानी से लगाया जा सकता है यानी मुझे पुत्र की प्राप्ति होगी तो मैं शेख मोइनुद्दीन चिश्ती के दरगाह पर आगरा से पैदल जाऊंगा।'' इस प्रकार समान्य रूप से यह कह सकते हैं कि मुगलकालीन समाज के हिंदू –मुस्लिम के बीच दोनों में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत रूखा था जिसका स्थिति हम इस प्रकार से अवगत करा सकते हैं।

1. पर्दाप्रथा:– मुगल काल में मुस्लिम स्त्रियों में पर्दा प्रथा का प्रचलन था। मुस्लिम स्त्रियां बुर्के का प्रयोग करती थी उलबेली के अनुसार:– चरित्रहीनता गरीबी को छोड़कर मुस्लिम स्त्रियों कभी घर से यहां नहीं निकलती थी, विशेष अवसर पर स्त्रियां घर से निकलती थी मुस्लिम शासक वर्ग ने पर्दाप्रथा का अनुसरण किया। बेनी प्रसाद का कहना है कि नूरजहां एक ऐसी महिला थी जो पर्दा प्रथा में नहीं रहती थी मुस्लिम घराने की स्त्रियां ढकी पालकी से ही घर से बाहर निकलती थी स्त्रियों के लिए अंगरक्षक भी होते थे। बदांयूनी के अनुसार:– ''अकबर ने आदेश निकाला था यदी कोई स्त्री बिना पर्दे के बाजार में भ्रमण करती है तो उसे वैश्यालय में ले जाया जाए और पेशे को अपनाने के लिए बाध्य किया जाए।

मुसलमानों में प्रचलित पर्दाप्रथा से प्रभावित हुए बिना न रह सका। जायसी एवं विद्यापती के विवरणों से पता चलता है उत्तर प्रदेश एवं बंगाल में हिंदू घरों में भी पर्दा का प्रचलन था कुलीन घरानों की स्त्रियां घर से घुंघट निकाल कर घूमती थी। किसान एवं विभिन्न पेशे के लोग स्त्रियां पर्दा नहीं करते थी।

2. विवाह:– कुरान के अनुसार मुसलमान चार विवाह कर सकता था, जिससे मुसलमानों का पारिवारिक जीवन कष्ट पूर्ण हो जाता था। स्त्रियों में पारस्परिक प्रतिद्वंदिता आ जाती थी

जिससे आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती थी निम्न वर्ग का मुसलमान एक विवाह करता था। हिंदुओं में एक पत्नी विवाह का प्रचलन था यदि किसी हिंदू की पत्नी से संतान नहीं होती थी तो वह ब्राह्मणों की सहायता से दूसरी विवाह कर सकता था। हिंदू राजाओं एवं शाही घरानों में अनेक विवाह एवं राजपूतों में स्वयंवर का प्रचलन था।

मुगलकालीन समाज में बाल विवाह का प्रचलन था। मुसलमानों के आगमन से स्त्री अपराहन के कारण हिंदुओं में भी बाल विवाह को जन्म दिया। कन्या का विवाह 8 और 9 वर्ष की आयु में कर दिया जाता था। परंतु अकबर ने बाल विवाह पर रोक लगाते हुए 12 वर्षों से कम लड़कियों का उम्र और 16 वर्षों से कम लड़कों का उम्र नहीं होना चाहिए। परंतु इसका कोई सफलता नहीं मिला दहेज प्रथा उस समय भी प्रचलन था।

3. सती प्रथाः– मुगलकाल में हिंदू समाज की उच्चवर्ग की स्त्रियों में सतीप्रथा का प्रचलन बहुतायत था। इस प्रथा का विशेष रूप से राजस्थान में था। इब्नबतूता ने यह बताया कि समाज में विधवाओं की स्थिति दयनीय थी विधवाएं विवाह नहीं करती थी उन्हें अपने केशों को काटना होता था और अपना सारा जीवन दास की भांति बिताना पड़ता था अकबर ने सती प्रथा को रोकने के लिए आदेश निकाला किसी स्त्री को जबरन सती नहीं करा सकते हैं ऐसा करने वालों को दंडित किया जाएगा परंतु अकबर का उद्देश सफल नहीं हो पाया।

4. जौहर प्रथाः– मुगलकाल में राजपूत स्त्रियों में जोहर की प्रथा प्रचलित थी। राजपूत जिस समय रणभूमि में न्योछावर हो जाते थे, उस समय उनकी स्त्रियां हंसते–हंसते अग्नि में समर्पित हो जाती थी इसे जौहर की प्रथा कहते हैं। अब्दुल फजल ने भी चित्तौड़ पर मुगलों के अधिकार के बाद वहां की राजपूत स्त्रियों के जौहर के विषय में उल्लेख किया है।

5. स्त्री शिक्षाः– मुगल काल में उच्च वर्ग की विदुषी थी कला एवं साहित्य में विशेष अनुराग रखती थी मीराबाई, नूरजहां, अकबरबाई एवं गुलबदन बेगम इस काल की विदुषी स्त्रियां थी। दक्षिण भारत में संस्कृति के क्षेत्र में स्त्रियों में विशेष रूचि थी। कन्याओं को घर पर ही शिक्षा दी जाती थी।

6. स्त्रियों की व्यवसायः– भारत की स्त्रियां अपने घर पर ही कार्य देखती थी कुछ स्त्रियां विभिन्न व्यवसाय से जुड़ी हुई थी, स्त्रियां कपड़ा बुनने का कार्य करती थी। कुछ स्त्रियां नाच गान भी करती थी। अलबरूनी ने लिखा है– ''देवदासियां मंदिरों में नृत्य या भक्तिगीत गाने के लिए सुंदर स्त्रियों को रखा जाता था। शिक्षित स्त्रियों ने अध्यापन का व्यवसाय अपनाया था वै याएं शहर से बाहर निवास करती थी।

7. प्रशासन में योगदानः– मुगलकाल में स्त्रियों ने प्रशासन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी 1560 से 64 तक अकबर के मुख छाया माहम अनगा का प्रशासन पर काफी प्रभाव था। इतिहासकारों ने इसे पेटीकोट गवर्नमेंट का नाम दिया है गोंडवाना की रानी दुर्गावती के शासन

के अंतर्गत 70000 ग्राम और कस्बों थे अहमदनगर में चांदबीबी का शासन था 1611 से 1627 तक जहांगीर के शासनकाल में नूरजहां का विशेष प्रभाव था।

8. परिवार में स्थानः– हिंदू समाज में नारी को गृहस्वामिनी के रूप में देखा जाता था कोई भी धार्मिक कार्य स्त्री के अनुपस्थिति में संपन्न नहीं हो सकता था, स्त्रियां घरेलू कार्य एवं पति का सेवा करना था। मुस्लिम परिवार में स्त्रियों की दशा सोचनीय थी, मुसलमान पुरुष अपनी पत्नी को आसानी से तलाक दे सकता था।

***(a)* भोजनः**– बाबर ने साधारण वर्ग का भोजन खिचड़ी बताया है। उत्तर भारत में मुख्य भोजन गेहूं, मोटे अनाज की पत्तियां, सब्जी और दाल था। हिंदू वर्ग के उपेक्षा मुस्लिम मांस का अधिक प्रयोग करते थे। सामान्य वर्ग में नमक महंगा होने के केले के छाल को निकाल कर कड़वी वस्तुओं का प्रयोग करते थे।

उच्च वर्ग के लोग चपाती, चावल, पूरी, दही, मक्खन, तेल, धी, खीर, एवं पनीर इसका मुख्य भोजन था। राजपूत और मुसलमान मांस का प्रयोग करते थे।

***(b)* वस्त्रः**– आईने अकबरी से ज्ञात होता है कि मुगल शासक उत्तम प्रकार के वस्त्र पहनते थे। फार्गी, चकमन, गादर, आदि 11 प्रकार कोटो का उल्लेख मिलता है। औरंगजेब का पहनावा सादा था। अमीर वर्ग धोती और किमती साल पहनते थे। कालीकट के ब्राहाण काठ की खडाउ का प्रयोग करते थे बर्नियर ने कहा है– की गर्मी के कारण मौजे नहीं पहनते थे। भारत की जलवायु गर्म होने के कारण लोग कम कपड़े का प्रयोग करते थे। कपास की खेती सूती वस्त्र के निर्माण गांव में होता था।

***(c)* आवास फर्नीचरः**– गांव में साधारण वर्ग मिट्टी के बने मकानों में निवास करते थे, चारपाई तथा बांस की चटाइयां उसका फर्नीचर था। कुम्हार द्वारा मिट्टी का बर्तन निर्मित करते थे। अभिजात्य वर्ग तांबे और अन्य धातुओं के बर्तन का प्रयोग करते थे।

***(d)* मादक द्रव्यः–** कुरान में मद्य निषेध होने के बावजुद भी, मुस्लिम समाज के मदिरा का सेवन प्रचलन था। औरंगजेब को छोड़कर सभी शासक मदिरा का सेवन करते थे। मदिरा के सबसे सस्ती ताड़ी होती थी। 1684 में औरंगजेब ने मध निषेध पर प्रतिबंध लगाया परंतु अपने दरबार में और अमीरों से रोक नहीं पाया। अफीम का प्रचलन राजपूतों और मुसलमानों में अत्यधिक था। हुमायूं अफीम का अत्यधिक प्रयोग करता था।

***(e)* श्रृंगारः–** मुगल काल में स्त्री और पुरुष दोनों श्रृंगार के दोनों प्रेमी थे। अब्दुल फजल ने 37 प्रकार के आभूषणों का उल्लेख किया। औरंगजेब को छोड़कर सभी मुगल शासक आभूशण के प्रेमी थे। गरीब वर्ग के सोने–चांदी के को छोड़कर अन्य वस्तुओं का आभूषण पहनते थे।

(f) **मनोरंजनः**– चौगान राजपूतों और मुगल शासक दोनों का प्रिय खेल था। शाही महिलाएं भी इसमें भाग लेती थी। मीर शरीफ एवं मीर गयासुद्दीन नामक दो अकबर कालीन खिलाड़ियों के नाम प्राप्त होते हैं। शासक वर्ग शिकार का भी शौकीन था। अमीर लोग शेर–चीते, हांथी आदि जंगली जानवरों का शिकार करते थे और अमीर और गरीब तीरों से चिड़ियों का शिकार करते थे। मुगलकाल में मुक्केबाजी पशु–दौड़ पशु–युद्ध, घुड़सवारी, तैराकी, शतरंज, और ताश भी मनोरंजन के लिए साधन था।

(g) **दास प्रथाः–** मुगल काल में दास प्रथा का प्रचलन था। हिंदू और मुसलमान शासक एवं अभिजात्य वर्ग में दास–दासियों को रखा जाता था। चीन और तुर्की से भी दासियों का आयात होता था। युद्ध में बंदी बनाए गए पुरुषों से दास का कार्य कराया जाता था।